

Padma Bhushan



ACHARYA VASHISHTHA TRIPATHI

Acharya Vashishtha Tripathi is an eminent scholar of Sanskrit studies. A great man like him is the best example of Indian knowledge, Science, Indian culture, rituals and lifestyle.

2. Born on 15th October, 1940 in Deoria, Uttar Pradesh, Acharya Tripathi studied the Shastras like Nyaya, Veda. etc. under the guidance of his erudite Gurus like Acharya Badrinath Shukla, Pt. Vamacharan Bhattacharya and Acharya Shriram Pandey Prabhruti. According to the great tradition of Kashi, he enhanced his teaching skills by teaching junior students since his student days. At the young age of 20, with proper teaching of the difficult texts of 'Nyaya Shastru', even the then Acharyas of repute considered him as an authority on 'Aryaya Shastru'. The Gurus were obviously proud to have such a disciple, whose teaching led to the influx of even the trickiest science of Nyaya.

3. Acharya Tripathi's unparalleled devotion to Nyaya Shastra, hard work and complete devotion to teaching has given birth to a series of scholarly disciples. Presently, any Acharya of Nyaya and Philosophy in any Sanskrit University, College and Educational Institutions of India, is directly or by tradition associated with the scholarly tradition of him. There are many such universities where the entire department of Nyaya is being run by his disciples. The multidimensional glory of his knowledge is paving the way for the disciples. Soon after passing the examination of 'Nyayacharyar', with gold medal, he got selected at Banaras Hindu University. Varanasi. He taught as Professor at Sampurnanand Sanskrit Vishwavidyalaya, Varanasi.

4. Acharya Tripathi has enriched the Indian knowledge system through 'Shastranu-chilan'. His effort, loyalty and clean image are exemplary for today's youth. He is an institution in himself. Many students got the distinction of getting Vachaspati, Vidyavaridhi degrees under his guidance. His disciple- tradition is superb. Many of his disciples are glorifying his knowledge while working as Vice-Chancellors and in other administrative positions in reputed universities of India. Even during the Corona pandemic times, he has enriched the knowledge of students and scholars by satiating their thirst for knowledge through virtual mode.

5. Acharya Tripathi has been conferred with numerous awards and honours including Presidential Award in 2004; 'Antarrashtriya Himadri Award' in 2003 by the Uttarakhand Sanskrit Academy; 'Vidvat Bhushan, 'Annapurnashree', 'Mahamahopadhyay', 'Vachaspati' Samman etc.. In Kashi, the capital of learning, he has been revered as synonymous to Nyaya Shastra.

पद्म भूषण



आचार्य वशिष्ठ त्रिपाठी

आचार्य वशिष्ठ त्रिपाठी संस्कृत अध्ययन के प्रख्यात विद्वान हैं। उनकी जैसी महान विभूति भारतीय ज्ञान, विज्ञान, भारतीय संस्कृति, कर्मकाण्ड और जीवन शैली का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

2. 15 अक्टूबर, 1940 को, उत्तर प्रदेश के देवरिया में जन्में, आचार्य त्रिपाठी ने अपने प्रकाण्ड गुरुओं आचार्य बद्रीनाथ शुक्ल, पं. वामाचरण भट्टाचार्य और आचार्य श्रीराम पांडे प्रभृति से न्याय, वेद आदि जैसे शास्त्रों का अध्ययन किया। काशी की महान परंपरा के अनुसार, उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन से ही कनिष्ठ छात्रों को पढ़ाकर अपने शिक्षण कौशल को निखारा। उन्होंने 20 वर्ष की अल्पायु में 'न्याय शास्त्र' जैसे कठिन ग्रंथों का समुचित अध्यापन किया जिससे तत्कालीन ख्यातिप्राप्त आचार्यों ने भी उन्हें 'न्याय शास्त्र' का विद्वान माना। गुरुओं को स्पष्ट रूप से ऐसे शिष्य पर गर्व था, जिसके अध्यापन ने न्याय के सबसे क्लिष्ट विज्ञान को सुबोध बना दिया।

3. आचार्य त्रिपाठी की न्याय शास्त्र के प्रति अनन्य श्रद्धा, कठोर परिश्रम और शिक्षण के प्रति पूर्ण समर्पण ने विद्वान शिष्यों की एक शृंखला को जन्म दिया है। वर्तमान में, भारत के किसी भी संस्कृत विश्वविद्यालय, कॉलेज और शिक्षा संस्थान में न्याय और दर्शन शास्त्र का कोई भी आचार्य, उनकी विद्वतापूर्ण परंपरा से प्रत्यक्ष या परंपरा से जुड़ा हुआ है। ऐसे कई विश्वविद्यालय हैं जहां न्याय का पूरा विभाग उनके शिष्यों द्वारा चलाया जा रहा है। उनके ज्ञान की बहुआयामी महिमा शिष्यों का मार्ग प्रशस्त कर रही है। 'न्यायाचार्य' की परीक्षा में स्वर्ण पदक के साथ उत्तीर्ण होने के तुरंत बाद, उनका चयन बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में हो गया। उन्होंने संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में प्रोफेसर के रूप में अध्यापन कार्य किया।

4. आचार्य त्रिपाठी ने 'शास्त्रानुशीलन' के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली को समृद्ध किया है। उनका प्रयास, निष्ठा और स्वच्छ छवि आज के युवाओं के लिए अनुकरणीय है। वह अपने आप में एक संस्था हैं। उनके मार्गदर्शन में कई छात्रों को वाचस्पति, विद्यावारिधि की उपाधियां प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ। उनकी शिष्य-परंपरा उत्कृष्ट है। उनके कई शिष्य भारत के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में कुलपति और अन्य प्रशासनिक पद पर काम करते हुए उनकी ज्ञान महिमा का प्रसार कर रहे हैं। कोरोना महामारी के समय में भी, उन्होंने वर्चुअल मोड के माध्यम से छात्रों और विद्वानों की ज्ञान पिपासा तृप्त करके उनका ज्ञान समृद्ध किया है।

5. आचार्य त्रिपाठी को 2004 में राष्ट्रपति पुरस्कार; 2003 में उत्तराखंड संस्कृत अकादमी द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय हिमाद्री पुरस्कार'; 'विद्वतभूषण', 'अन्नपूर्णाश्री', 'महामहोपाध्याय', 'वाचस्पति' सम्मान आदि सहित अनेक पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं। विद्वता की राजधानी काशी में उन्हें न्यायशास्त्र का पर्याय माना गया है।